नारीलोक

अप्रैल 2026 अंक 333

अध्यक्षीय कार्यालय
SUMAN NAHATA
G-67, Kirti Nagar, New Delhi, 110015
Mob no: 9818854120
Email: sumannahata67@gmail.com

अध्यक्षीय टंकार

मेरी प्यारी बहनों!
सस्नेह जय जिनेन्द्र!

अप्रैल का महीना अपने साथ एक विशेष संदेश लेकर आता है। प्रकृति का तापमान बढ़ जाता है, सूरज की तपिश तेज हो जाती है और वातावरण में गर्मी का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगता है। ऐसे समय में जहां एक ओर शरीर थकान और तपन को अनुभव करता है, वहीं दूसरी ओर यह समय आत्मबल, धैर्य और तप की प्रेरणा भी देता है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में ग्रीष्म ऋतु को केवल कठिनाई का नहीं, बल्कि तप, साधना और आत्मशक्ति के जागरण का समय माना गया है।

इसी पावन माह में 19 अप्रैल को अक्षय तृतीया का महापर्व भी आने वाला है, जो जैन परंपरा में विशेष आध्यात्मिक महत्व रखता है। यह दिन उन सभी वर्षीतप साधकों और साधिकाओं के लिए अत्यंत गौरव और अभिनंदन का अवसर है, जिन्होंने पूरे वर्ष तप, संयम और साधना के माध्यम से आत्मशुद्धि का अद्भुत मार्ग अपनाया है। वर्षीतप केवल उपवास की एक साधना नहीं है, बल्कि यह आत्मबल, धैर्य, अनुशासन और आध्यात्मिक समर्पण का अनुपम उदाहरण है। इस पावन अवसर पर हम सभी बहनों की ओर से उन सभी वर्षीतप साधकों का हार्दिक अभिनंदन और वंदन करते हैं। उनका यह तप हमें यह सिखाता है कि जब मन में श्रद्धा, संकल्प और साधना का दीप जलता है, तब कठिन से कठिन परिस्थितियां भी हमारे मार्ग की बाधा नहीं बनतीं। तप की यह परंपरा हमें अपने जीवन में संयम, आत्मनियंत्रण और आत्मोन्नति का संदेश देती है।

बहनों! अप्रैल का यह महीना केवल तप और साधना का ही नहीं, बल्कि आत्मशक्ति के रचनात्मक उपयोग का भी समय है। तेज धूप और गर्मी की अधिकता के बीच हमें यह ध्यान रखना है कि हमारी ऊर्जा केवल परिस्थितियों से संघर्ष में ही न लगे, बल्कि वह सृजन, सेवा और संस्कार निर्माण की दिशा में प्रवाहित हो। महिलाएं समाज की शक्ति हैं। यदि वे अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में नियोजित करती हैं तो परिवार, समाज और संस्कृति तीनों को नई दिशा मिलती है। इसलिए हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि इस तपती गर्मी में भी हमारी सृजनात्मकता और सेवा की भावना शीतल छाया की तरह समाज को सुख पहुंचाए। मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि हमारा महिला मंडल और उसके सहयोगी सखा मंडल निरंतर अनेक रचनात्मक और प्रेरणादायी गतिविधियों में संलग्न हैं। संस्कार निर्माण, सेवा कार्य, आध्यात्मिक कार्यक्रम, सांस्कृतिक गतिविधियां और समाजोपयोगी योजनाओं के माध्यम से हमारे मंडल ने निरंतर नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। यह केवल संगठन की सक्रियता ही नहीं, बल्कि बहनों की सामूहिक चेतना और समर्पण का परिचायक है।

इन सभी उपलब्धियों के पीछे परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन आशीर्वाद की दिव्य प्रेरणा विद्यमान है। उनके द्वारा प्रदत्त जीवन मूल्यों, अनुशासन और साधना की प्रेरणा ने समाज में नई जागृति उत्पन्न की है। साथ ही हमें निरंतर परम श्रद्धेया साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी का स्नेहिल आशीर्वाद और मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है, जो हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके निर्देशन से महिला शक्ति को दिशा और गति दोनों प्राप्त हो रही हैं। इसी क्रम में मुख्य मुनि महावीर कुमार जी तथा साध्वीवर्या संबोध यशा जी का मार्गदर्शन और प्रेरणा भी हमें निरंतर मिलती रहती है, जो हमारी गतिविधियों को नई ऊर्जा प्रदान करती है। जब आध्यात्मिक नेतृत्व, संगठनात्मक सहयोग और महिला शक्ति का समन्वय होता है, तब समाज में परिवर्तन और प्रगति के नए द्वार खुलते हैं।

बहनों! आज आवश्यकता है कि हम सभी अपने भीतर की शक्ति को पहचानें और उसे सकारात्मक दिशा में प्रयोग करें। महिला केवल परिवार की संरक्षक ही नहीं, बल्कि समाज की संस्कार निर्माता भी है। यदि महिला अपने संकल्प, अनुशासन और सेवा भाव के साथ आगे बढ़ती है तो वह समाज में नई चेतना का संचार कर सकती है।

आइए, इस माह हम सब मिलकर यह संकल्प लें- अपनी ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों में लगाएँगे। परिवार और समाज में संस्कारों का दीप जलाएँगे। सेवा, सहयोग और सद्भाव की भावना को मजबूत करेंगे और महिला मंडल की गतिविधियों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सक्रिय योगदान देंगे।

हमें यह याद रखना है कि शक्ति का वास्तविक अर्थ केवल सामर्थ्य नहीं, बल्कि सृजन की क्षमता है। जब शक्ति अनुशासन और संस्कार के साथ जुड़ती है, तब वह समाज को नई दिशा देने वाली प्रेरणा बन जाती है। आप सभी के लिए मंगलकामनाओं के साथ-
आपके यहां विराजित पूज्य चारित्रात्माओं को सविधि वंदना, सुखपृच्छा।

स्नेहाकांक्षी
सुमन नाहटा

उषा

भिक्षुगाथा

आचार्य भिक्षु द्वारा धर्म क्रांति का आधार धर्म क्रांति के आवाहक राजनगर का श्रावक वर्ग अनेक वर्षों से तत्कालीन साधु-समाज के शिथिलाचार से बड़ा खिन्न था। उनके मन में श्रद्धा का भाव धीरे-धीरे कम होता जा रहा था और एक समय ऐसा आया जब वहाँ के श्रावकों ने तत्कालीन शिथिल श्रमण संघ को मान्य करना छोड़ दिया और साहसपूर्वक यह घोषणा कर दी कि जब तक श्रमण संघ अपने में सुधार लाकर शिथिलताओं को दूर नहीं करते, तब तक हम उन्हें न मान्य करेंगे और न ही वंदन करेंगे। बहिष्कार का संवाद जब आचार्य रघुनाथजी तक पहुँचा तो वे बहुत चिंतित हुए। तब उन्होंने श्रावकों को समझाकर मार्ग पर लाने जैसे आवश्यक व महत्वपूर्ण कार्य के लिए अपने प्रिय शिष्य भीखणजी को चुना, क्योंकि वे शास्त्रज्ञ होने के साथ-साथ असाधारण बुद्धि के धनी भी थे। उन्होंने स्वामीजी को बुलाकर कहा - "तुम स्वयं बुद्धिमान हो, अतः कोई ऐसा उपाय करना जिससे श्रावकों की शंकाएँ मिटें और वे पुनः वंदन करने लगें।"

स्वामीजी चार साधुओं (टोकरजी, हरनाथजी, वीरभाणजी और भारमलजी) के साथ चातुर्मास के लिए राजनगर पहुँचे। स्वामीजी एक विरागी और तपस्वी साधु के रूप में प्रसिद्ध थे। इसलिए उनके आने पर राजनगर के श्रावकों को भी प्रसन्नता हुई और उन्होंने निश्चय किया कि वे संत भीखणजी को साधु-समाज के विषय में जो कुछ कहना चाहते थे, स्पष्ट रूप से कह देंगे। इस निश्चय के साथ स्वामीजी के पास आए।

स्वामीजी ने उनके साथ उनकी शंकाओं तथा वंदन-व्यवहार छोड़ देने, आदि विषयों पर चर्चा की। तब श्रावकों ने साधु समाज के आचार-विचार संबंधी अपने प्रश्नों को स्वामीजी के सामने रखा और कहा – "आप लोग अब जान-बूझकर दोषों का सेवन करने लगे हैं। कहीं आपके निमित्त स्थानक बनाए जाते हैं, कहीं मोल लिए जाते हैं। मानो उद्दिष्ट, आदि दोष आप लोगों पर लागू है ही नहीं। वस्त्र-पात्र आदि की मर्यादा का खुले आम उल्लंघन, बिना आज्ञा दीक्षित कर लेना, बहला कर दूसरे के शिष्यों को भगा कर ले जाना, न आपमें शुद्ध श्रद्धा है और न आचार, फिर हम आपको वंदन क्यों करें?"

स्वामीजी ने गुरु की बात ऊँची रखने के व्यामोह में, अपने बुद्धि-कौशल से श्रावकों को वंदन करने के लिए सहमत कर लिया, परन्तु श्रावकों के मन की शंकाएँ मिटी नहीं थीं। संयोगवश उसी रात स्वामीजी को जोर से ज्वर का प्रकोप हुआ। बुखार के उस आकस्मिक आक्रमण ने शरीर के साथ-साथ उनके मन को भी झकझोर दिया। कुछ समय पूर्व उन्होंने जिस मत पक्ष (गुरु-पक्ष) से प्रेरित होकर श्रावकों की बातों को उलटने का प्रयास किया था, वे उन्हें स्पष्ट ही एक मोह ज्ञात होने लगा। आत्म-चिन्तन और पश्चाताप की तीव्र अनुभूति करते हुए वे सोचने लगे- " मैंने जिनेश्वर देव के वचनों को छिपाकर सच्चों को झूठा साबित किया। यह कैसे अनर्थ कर डाला? यदि इस समय मेरी मृत्यु हो जाए, तो अवश्य ही मुझे दुर्गति में जाना पड़ेगा। क्या ऐसी स्थिति में ये मत पक्ष और ये गुरु मेरे लिए शरणभूत हो सकते हैं?"

इन विचारों ने उनके मन से मताग्रह के कालुष्य को धो डाला और इसी समय धर्म क्रांति का बीजारोपण हुआ।

गुरु वाणी

भावसत्य से क्या मिलेगा?

भावसत्य यानी भावधारा की निर्मलता। भावसत्य होने से भावों की शुद्धि हो जाती है। अध्यात्म की दृष्टि से विचार करें तो भाव-विशुद्धि से बड़ी कोई चीज नहीं है। आदमी शरीर से क्या करता है, वाणी से क्या बोलता है, ये सब ऊपरी बातें हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आदमी की भावना कैसी है? ऊपर से कठोर लगने वाला व्यक्ति यदि भीतर में शुद्ध है तो ऊपरी कठोरता कोई विशेष नुकसानदेह नहीं होती।

किन्तु दुर्जन व्यक्तियों का तो स्नेह भी खराब है। उनका स्नेह भी खतरनाक हो सकता है। जिसकी अन्तःचेतना में सच्चाई है, शुद्धता है, छलना या वंचना नहीं है, उसका भाव शुद्ध रहता है। भावशुद्धि रहेगी तो निश्चित कल्याण होगा। भाव अशुद्ध हैं तो ऊपर से भले कुछ भी कर लें, कल्याण नहीं हो सकता। आदमी यह ध्यान दे कि मेरे मन में कोई गलत विचार न आए, कोई विकार न आए। क्योंकि कहा गया है- यादृशी भावना यस्य, सिद्धिर्भवति तादृशी। जिसकी जैसी भावना होती है, उसके अनुसार निष्पत्ति, सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

भावना अंक के समान है और अनुष्ठान शून्य के समान है। भावना के साथ अनुष्ठान किया जाए तो अच्छा फल मिलता है। अंक के आगे शून्य लगाने से संख्या बढ़ जाती है। केवल शून्य का कोई मूल्य नहीं होता। भावना के बिना अनुष्ठान का विशेष फल नहीं होता। इसलिए भावना शुद्ध हो, यह प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ: संवाद भगवान से-2

संस्कार सरिता

शुभाशंसा जैन धर्म में भगवान ऋषभदेव से लेकर अब तक तप-साधना का क्रम चल रहा है। तपस्या का लक्ष्य है - आत्मविशोधि। बीज भूमि के भीतर तपता है, व्यापारी धन के लिए और विद्यार्थी विद्या के लिए तपस्या करता है। वैसे ही अध्यात्म पथ का पथिक मोक्ष के लिए तप करता है। 'तवसा धुणइ पुराणपावगं' साधक तपस्या के द्वारा छूटकर पूर्वकृत कर्मों को प्रकंपित करता है, निर्जरण करता है। वर्तमान में अब Physical fitness के लिए कई प्रकार के तप चल रहे हैं, जैसे- Intermediate fasting, 5:2 days fasting, eat-stop-eat, alternate day fasting, extended fasting, आदि। आधुनिक विज्ञान भी पाचनतंत्र की स्वस्थता व रोग-निवारण के लिए तप की महत्ता को स्वीकार करता है।

Corporate world का सूक्त है- Dream high. लक्ष्य उन्नत रहे। साधक भी आत्मविशोधि का उच्च लक्ष्य सामने रखे। फिर शारीरिक स्वास्थ्य तथा मानसिक शांति की उपलब्धि तो स्वतः होने की संभावना है।

जैन विश्व भारती (लाडनूं)
साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा

प्रेरक प्रसंग

♦ मन का खेल ♦

एक बार एक व्यक्ति जंगल पार कर रहा था। लंबी यात्रा के कारण वह बहुत थक गया था। उसने सोचा- "थोड़ी देर यहीं विश्राम कर लेता हूँ।" उसे एक घना पेड़ दिखाई दिया। वह उसी पेड़ के नीचे आराम करने के लिए रुक गया। थकान इतनी अधिक थी कि जैसे ही वह लेटा, उसे तुरंत गहरी नींद आ गई।

उस पेड़ की जड़ के पास दो बिल थे। एक बिल में एक कोबरा साँप रहता था और दूसरे बिल में एक छोटा चूहा। जब वह आदमी गहरी नींद में सो रहा था, तभी कोबरा अपने बिल से बाहर निकला। उसने गहरी नींद में सोए हुए उस व्यक्ति को हल्के से स्पर्श किया। उसने उसे काटा नहीं, केवल स्पर्श किया। उस स्पर्श से आदमी की नींद उचट गई और उसने हल्की-सी करवट ली। यह देखकर कोबरा फिर से अपने बिल में लौट गया।

पर तब तक दूसरे बिल से चूहा बाहर निकल आया था। चूहे को देखते ही वह आदमी क्रोधित हो गया और झुंझलाकर बोला- "नालायक! मेरी नींद खराब कर दी। चल हट!" इतना कहकर वह फिर से सो गया। आदमी की फटकार सुनकर चूहा अपने बिल में चला गया और सोचने लगा- "मैंने तो इसे न छुआ, न ही काटा, फिर भी मुझे गाली सुननी पड़ी। अब मैं सच में इसे काटूँगा।"

कुछ देर बाद चूहा फिर बाहर आया। उसने उस आदमी को काट लिया और तुरंत अपने बिल में छिप गया। आदमी फिर करवट लेकर उठ बैठा। उसी समय कोबरा भी अपने बिल से बाहर निकला। जैसे ही उस आदमी की नज़र कोबरा पर पड़ी, वह डर के मारे बेहोश होकर वहीं गिर पड़ा।

अब प्रश्न उठता है- उस आदमी को किसने बेहोश किया? चूहे ने या साँप ने? साँप ने तो उसे काटा भी नहीं था, केवल स्पर्श किया था। चूहे ने जब उसे काटा था, तब आदमी बेहोश नहीं हुआ था; वह तो उठ भी गया था। लेकिन जैसे ही उसने साँप को देखा, वह भय से बेहोश हो गया।

अर्थात न साँप ने उसे मारा और न चूहे ने। उसे उसके अपने मन के भय ने परास्त कर दिया।

बोध: इस कथा से जैन धर्म का यह सत्य उजागर होता है कि जीव के परिणाम, सुख-दुःख में कर्म का उदय निमित्त मात्र है। कर्म जीव को सुखी-दुःखी नहीं करते हैं। यदि ऐसा होता तो कर्म आत्मा से बलवान कहलाता है, लेकिन सत्य यह नहीं है। सत्य यह है कि जीव स्वयं अपने मनोभावों से सुखी या दुःखी बनता है। इसीलिए भगवान महावीर ने कहा- "समता (समभाव) ही धर्म है।"

♦ तत्त्विक सुश्राविका: छोटूबाई बैद ♦

छोटूबाई का जन्म सन् 1942 में हुआ। वे सुजानगढ़ निवासी धनराजजी चोरड़िया की पुत्री थीं। तत्कालीन प्रथा के अनुसार उनका विवाह 12 वर्ष की बाल्यावस्था में ही बीदासर निवासी रावतमलजी बैद के साथ सम्पन्न हुआ। वे सरल प्रकृति और भद्र परिणामों वाली महिला थीं। धार्मिक रुचि प्रारंभ से ही अच्छी थी। अवकाश के क्षणों को आलस्य में न खोकर वे धर्म जागरण में अधिक समय व्यतीत किया करती थीं। अक्षरज्ञान न होने पर भी दूसरों से एक-एक बोल पूछ-पूछ कर उन्होंने 25 बोल, तेरह द्वार, लघु दण्डक, गतागत, आदि अनेक थोकड़े कंठस्थ कर लिए थे। अनेक तात्विक और आध्यात्मिक गीतिकाएँ भी उन्होंने इसी प्रकार सीखी थीं।

त्याग, तपस्या में भी उनकी बड़ी रुचि रहा करती थी। 35 वर्ष की अवस्था में पति-पत्नी ने पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर लिया। 35 वर्ष से पूर्व की तपस्या का विवरण प्राप्त नहीं है। उसके बाद उन्होंने सैकड़ों में उपवास किए। शेष तपस्याओं का विवरण इस प्रकार है - 400 बेला, 100 तेला, 40 चौला, 50 पंचोला, 6 की तपस्या 7 बार, 7 की 3 बार, 8 की 8 बार, 9 की 4 बार, 10 की 4 बार, 11 की 4 बार, 12 की 2 बार तथा 13, 14, 15 और 16 की एक-एक बार।

इसके अतिरिक्त धर्मचक्र, कर्मचूर, आदि तप तथा अनेक बार एक से लेकर अठाई तक का आयंबिल तप भी किया। सन् 2012 के भाद्र माह में उनके पेट में पीड़ा उठी। वह क्रमशः बढ़ती गई। धीरे-धीरे शरीर निर्बल होता गया और अन्न के प्रति अरुचि हो गई। कुछ दिन उन्होंने केवल दूध और पानी के सहारे बिताए। और अंत में 70 वर्ष की वृद्धावस्था में दृढ़ संकल्प के साथ पोष कृष्णा नवमी को तिविहार और फिर दशमी की रात्रि को चौविहार संथारा स्वीकार कर लिया और उसी रात्रि के पश्चिम प्रहर में उनका देहावसान हो गया।

संपूर्ण समाज उनकी श्रद्धा, समर्पण और साधनामय जीवन को कोटि-कोटि वंदन अर्पित करता है।

♦ संस्था संविधान ♦

- साधारण सदन की बैठक की सूचना (बैठक की तिथि को छोड़कर) कम से कम 15 दिन पूर्व दी जाएगी। सूचना में बैठक की तिथि, स्थान, समय और कार्य-सूची का उल्लेख होगा।
- साधारण सदन की बैठक की सूचना मंडल के बुलेटिन, पत्र या अन्य माध्यम से सदस्यों को प्रेषित करनी होगी। किसी कारणवश सूचना देर से मिलने के कारण बैठक व उसमें हुई कार्यवाही तथा पारित प्रस्ताव अमान्य नहीं समझे जाएंगे।
- साधारण सदन की बैठक में सभी निर्णय बहुमत से लिए जाएंगे।

श्रावक संदेशिका

संघीय संस्थाओं का स्वरूप- केंद्रीय संस्था:

- सामान्यतया कल्याण परिषद द्वारा अधिमानित संस्था ही केंद्रीय संस्था कहलाने की अधिकारी होगी।
- उसका लाभ पूरे देश अथवा देश-विदेश दोनों को मिल सकेगा।उसके सदस्य अखिल भारत अथवा भारत व विदेश दोनों से बन सकेंगे।
- उनके बारे में अपेक्षानुसार यथोचित किसी भी रूप में कल्याण परिषद द्वारा जानकारी व जाँच की जा सकेगी।
- वह कहीं से भी अनुदान प्राप्त करने की अधिकारी होगी।

संस्थागत सामान्य निर्देश:

- संस्था के आय-व्यय विवरण आदि को व्यवस्थित और सुरक्षित रखें, उनमें पूर्ण पारदर्शिता रखें तथा उसे समय-समय पर कार्यसमिति की बैठक में प्रस्तुत करें। अगर संस्था रजिस्टर्ड हो तो उसे यथासमय ऑडिट अवश्य कराएँ।
- स्थानीय संघीय संस्थाओं के साथ यथासंभव सामंजस्य और सौहार्द बनाए रखें। यथोचित रूप से उनसे अपेक्षित सहयोग लें और उनका अपेक्षित सहयोग करें।

सेवा संवाद

♦ संवाद सेवा का, समर्पण का, संगठित नारी शक्ति का ♦

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सानिध्य में अ.भा.ते.म.मं. ने प्राप्त किया एशिया बुक रिकॉर्ड

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में, साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के प्रेरणा से देशभर में आयोजित व्यापक सर्वाइकल कैंसर स्क्रीनिंग एवं जन-जागरूकता अभियान के माध्यम से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में स्थान प्राप्त कर एक नया इतिहास रच दिया। इस अभियान के अंतर्गत देश के 309 से अधिक शहरों में 17,200 से अधिक परीक्षण (टेस्टिंग) किए गए, जो महिला स्वास्थ्य जागरूकता की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

यह कीर्तिमान संगठन की सामूहिक शक्ति, अनुशासन और नारी नेतृत्व का सशक्त प्रमाण है। यह उपलब्धि न केवल अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल बल्कि देशभर के समस्त शाखा मंडलों एवं सम्पूर्ण तेरापंथ नारी समाज के लिए अत्यंत गर्व का क्षण है। सेवा और संकल्प की इस स्वर्णिम यात्रा में यह उपलब्धि ABTMM के सामाजिक योगदान का एक प्रेरणादायी अध्याय बन गई है।

परम पूज्य गुरुदेव की सन्निधि में "प्रेरणा सम्मान" कार्यक्रम का भव्य आयोजन: 13 मार्च 2026

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में लाड़नूँ महिला मंडल द्वारा 13 मार्च 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के पावन अवसर पर "प्रेरणा सम्मान" कार्यक्रम परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में अत्यंत भव्य एवं प्रेरणादायी रूप में आयोजित किया गया। इस विशेष अवसर पर 37 साधु-साध्वियों की मातुश्री, दादीश्री एवं नानीश्री को "प्रेरणा सम्मान पत्र" प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन महान मातृशक्तियों के प्रति कृतज्ञता और श्रद्धा का प्रतीक था, जिनके सुसंस्कारों, त्याग और आध्यात्मिक प्रेरणा से साधु-साध्वी समाज का निर्माण हुआ तथा जिन्होंने अपने संतानों को धर्म, साधना और संयम के पथ पर अग्रसर करने का गौरवपूर्ण कार्य किया। इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण जी एवं साध्वी प्रमुखा श्री जी ने इस प्रेरणादायी पहल की सराहना करते हुए इसे "महादान" की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि जो माता अपने पुत्र-पुत्रियों को धर्मसंघ की सेवा और साधना के पथ पर समर्पित करती है, वह वास्तव में समाज के लिए महान प्रेरणा का स्रोत बनती है। ऐसी मातृशक्ति के सम्मान से समाज में संस्कार, त्याग और आध्यात्मिकता के प्रति नई चेतना का संचार होता है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष के अनुरोध पर लाड़नूँ के साथ-साथ सरदारशहर, बीदासर, सुजानगढ़, खाटू एवं छापर से लगभग 163 सदस्य बसों द्वारा लाड़नूँ पहुँचे। साथ ही कुटीर में सेवा प्रदान करने वाली बहनों की भी बड़ी संख्या में गरिमामयी उपस्थिति रही। गणवेश में सुसज्जित बहनों की अनुशासित और उत्साहपूर्ण उपस्थिति से पूरा वातावरण अत्यंत भव्य, प्रेरणादायी एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत प्रतीत हो रहा था।

कार्यक्रम का संचालन अ.भा.ते.म.मं. की संगठन मंत्री श्रीमती निधि सेखानी ने कुशलतापूर्वक किया। प्रेरणा सम्मान पत्र का वाचन उपाध्यक्ष श्रीमती नीतू पटावरी द्वारा किया गया तथा स्वागत उद्बोधन लाड़नूँ महिला मंडल उपाध्यक्ष श्रीमती शोभा दुगड़ ने प्रस्तुत किया। इस प्रेरणादायी कार्यक्रम ने मातृशक्ति के त्याग, संस्कार और आध्यात्मिक योगदान को सम्मानित करते हुए समाज के समक्ष एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया।

"गृहलक्ष्मी स्वाभिमान अभियान" एवं "प्रेरणा सम्मान" अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर देश भर में भव्य आयोजन: 7 मार्च 2026

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा एक विशेष पहल की गई, जिसके अंतर्गत देशभर की शाखा मंडलों को अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय उन एनजीओ से संपर्क स्थापित करने के लिए प्रेरित किया गया जो विशेष रूप से महिला सशक्तिकरण और महिला विकास के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। इस उद्देश्य से विभिन्न शाखा मंडलों ने अपने-अपने क्षेत्रों के लगभग 1582 एनजीओ के साथ संवाद एवं परिचय बैठकें आयोजित कीं। इन बैठकों के दौरान एनजीओ प्रतिनिधियों को अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा वर्षों से महिला सशक्तिकरण के विविध आयामों पर किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी गई।इन प्रयासों को जानकर एनजीओ प्रतिनिधियों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कई प्रतिनिधियों ने आश्चर्य और प्रसन्नता के साथ यह अपना यह अनुभव बताया कि अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा महिला जागरण और सशक्तिकरण के लिए इतने व्यापक स्तर पर निरंतर कार्य किया जा रहा है। इस संवाद के माध्यम से भविष्य में समाजहित के कार्यों को और अधिक प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने की संभावनाओं पर भी विचार हुआ।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के इसी अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने एक विशेष भावनात्मक पहल करते हुए उन मातृशक्तियों को "प्रेरणा सम्मान" से सम्मानित किया गया, जिन्होंने अपने पुत्र, पुत्री, पोते या पोती को तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति प्रदान की। एक माता के लिए अपनी संतान को आध्यात्मिक पथ पर समर्पित करना अत्यंत संवेदनशील और साहसपूर्ण निर्णय होता है। ऐसी माताएँ त्याग, समर्पण और आस्था की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत करती हैं। इसी भाव को नमन करते हुए 205 शाखा मंडलों द्वारा लगभग 342 माता/दादी/ नानी का सम्मान किया गया, जिन्होंने अपने पुत्र-पुत्री या पोते-पोती को तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षा के लिए अनुमति प्रदान की।

यह पहल केवल सम्मान का कार्यक्रम नहीं, बल्कि उन मातृशक्तियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का एक स्नेहपूर्ण प्रयास था, जिनके निर्णय से तेरापंथ धर्मसंघ को समर्पित साधु-साध्वी रूप में अनमोल आध्यात्मिक धरोहर प्राप्त होती है।

कन्या मंडल की सार्थक गतिविधियों की झलक

Zoom Meet:15 मार्च 2026

सभी कन्या मंडल के प्रभारियों, सह-प्रभारियों, संयोजिकाओं एवं सह-संयोजिकाओं की Zoom के माध्यम से बैठक आयोजित की गई।इस बैठक में उपनिषद 3 एवं One Minute Wisdom प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए गए। बैठक में 300 से अधिक सदस्यों की उपस्थिति रही। साथ ही इस विषय पर भी विचार-विमर्श हुआ कि किस प्रकार कन्याओं की सहभागिता को और अधिक बढ़ाया जा सकता है।

ONE MINUTE WISDOM: Inter Zonal Competition Results

फरवरी 2026 में आयोजित इस प्रतियोगिता में सभी Zones ने उत्साहपूर्वक सहभागिता दर्ज करवाई।

- सदस्य संख्या की प्रतिशत भागीदारी — **East Zone** — 36% सदस्य भागीदारी
- क्षेत्र संख्या की प्रतिशत भागीदारी — **West Zone- Gujarat** — 100% क्षेत्रीय भागीदारी
- गुणात्मक विश्लेषण — **International Zone & South Zone**
- गुणवत्ता एवं मात्रा के समग्र संतुलन — **Central Zone**

उपनिषद 3: परिणाम घोषित

उपनिषद 3 केअंतर्गत देशभर के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त प्रविष्टियों में निम्नलिखित क्षेत्रों का प्रदर्शन विशेष रूप से उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय रहा-

- **East Zone**: Guwahati, Gulabbagh
- **South Zone**: R.R. Nagar
- **Central Zone**: Dombivili, Palghar, Dakshin Mumbai
- **West Zone**: Udhna, Bardoli, Daulatgarh, Limbayat, Dungri, Chaltan, Kishangarh
- **North Zone**: East Delhi
- **International Zone**: Kathmandu

भूल-सुधार

मार्च माह की नारीलोक में-

1. अनुदानदाता श्रीमान विनोद जी, अनिल जी एवं सुनील जी मुनोत, चेन्नई निवासी।
2. श्रीमती गुणमाला जी जैन (भिवानी) की पुण्यस्मृति में श्रीमती सुनीता जी जैन, दिल्ली निवासी, द्वारा अनुदान प्रदान किया गया।
3. पंचपरमेष्ठी गीतिका कंठस्थ करने वाली Top 20 Girls की सूची में सुश्री सलोनी कोठारी, किशनगढ़ पढ़े।

◆ महिला मंडल-करणीय कार्य ◆

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

श्री Utsav
एक कदम स्वावलंबन की ओर

श्री उत्सव का आयोजन बहनों के स्वावलम्बन के विकास तथा आत्मविश्वास के संवर्द्धन के उद्देश्य से किया जाता है। इस वर्ष पूरे देश की महिला मंडल शाखाओं द्वारा 15 जून से 15 जुलाई 2026 के मध्य श्री उत्सव का आयोजन किया जाना है। निर्धारित अवधि में आयोजन होने से श्री उत्सव की गूंज देशभर में प्रभावक और व्यापक स्तर पर होगी।

श्री उत्सव के नियम

अवधि
15 जून से 15 जुलाई 2025 के मध्य एक अथवा दो दिवसीय आयोजन

तेममं का लोगो : आगंतुक
महिलाओं के हाथ में तेममं का लोगो मेहन्दी द्वारा लगाया जाए तथा शाखा की समस्त बहनें भी मेहन्दी का लोगो अवश्य लगाएँ।

ड्रेस कोड
शाखा मंडल से संबंधित सभी सदस्य गणवेश में पधारें।

विशेष ध्यानार्थ
किसी भी प्रकार के हाउजी, रुपये-पैसे के खेल, वीडियो गेम आदि का आयोजन न किया जाए।

साज-सज्जा (डेकोर)
लाल चुनड़ी के साथ राजस्थानी शैली की साज-सज्जा वाले स्टॉल बनाए जाएँ।

स्वागत
स्वागत के समय केवल रोली का तिलक लगाया जाए, अन्य किसी सामग्री का उपयोग न किया जाए।

स्टॉल धारक
घरेलू सामग्री, हस्तनिर्मित वस्तुएँ तथा कलात्मक सामग्री के स्टॉल अनिवार्य रूप से लगाए जाएँ। समाज की जरूरतमंद महिलाओं को प्राथमिकता दी जाए।

प्रचार-प्रसार
रेडियो, यूट्यूब, प्रिंट मीडिया तथा सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए।

उद्घाटन
कार्यक्रम का उद्घाटन किसी विशिष्ट अतिथि या गणमान्य व्यक्ति द्वारा कराया जाए।

जमीकन्द वर्जित
खाने-पीने के स्टॉल में जमीकन्द का उपयोग वर्जित रखें।

योजनाओं का स्टॉल
अभातेममं की तमाम योजनाओं को दर्शाता एक स्टॉल अवश्य रखें।

रिपोर्ट
आयोजन के पश्चात कुल स्टॉल एवं कुल आगंतुकों की संख्या की रिपोर्ट तथा फोटो एवं वीडियो संयोजिका को अवश्य भेजें।

छोटी शाखाएँ भी इस दिशा में सक्रिय कदम बढ़ाएँ।
यदि आयोजन में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल से किसी भी प्रकार के सहयोग की आवश्यकता हो, तो हम आपके साथ भी हैं और सहयोग के लिए सदैव तैयार भी हैं।

अधिक जानकारी हेतु राष्ट्रीय संयोजिकाओं से संपर्क करें :
समृद्धि बोकाड़िया 90290 55220 / सुषमा बैंगानी 62932 23357

◆ गणगौर उत्सव-परंपरा, प्रेम और भक्ति का संगम ◆

बहनों, ईसर–पार्वती के पवित्र प्रेम का प्रतीक गणगौर उत्सव खुशियों का बिगुल बजा रहा है। जब व्यक्ति प्रेम की पराकाष्ठा पर होता है, तब मन का हर भाव उसका श्रृंगार बन जाता है। और जब भक्ति मन की अतल गहराइयों में हिलोरें लेती है, तब वह पूजनीय बन जाती है।

तो आइए, इस बार हम सब मिलकर महिला मंडल के आंगन को सरसब्ज बनाएं और गणगौर का त्योहार उत्साहपूर्वक मनाएं, परंपराओं का जश्न मनाएं।

गणगौर उत्सव आयोजन – दिशा निर्देश

आयोजन दिवस
- पूरे अप्रैल माह में अपनी सुविधा अनुसार किसी भी दिन उत्सव मनाया जा सकता है।

ड्रेस कोड
- घाघरा-ओढ़नी, लहंगा-चुन्नी, पारंपरिक राजस्थानी पोशाक एवं आभूषण
- नोट: तीन श्रेष्ठ पारंपरिक वेशभूषा धारकों का चयन कर सम्मानित करें।

मेहंदी सज्जा
- सभी बहनें घर से मेहंदी लगाकर आएं।
- मेहंदी में गणगौर के आकर्षक दृश्य: ईसर-पार्वती, चुनर, पूजन सामग्री, कलश, सिंधारा आदि दर्शाएं।
- नोट: दो श्रेष्ठ मेहंदी सजाने वाली बहनों को प्रोत्साहित करें।

सजावट (सज्जा)
- लहरिया एवं राजस्थानी शिल्पकला का उपयोग करें।
- जैसे – ऊंट, हवेलियां, किले, गांव, मिट्टी के बर्तन, धोरें आदि।

सांस्कृतिक प्रस्तुति
- गणगौर के पारंपरिक गीत की संगीतमय प्रस्तुति (ग्रुप में)
- 4–5 प्रस्तुतियां आयोजित करें।
- नोट: दो श्रेष्ठ प्रस्तुतियों को सम्मानित करें।

अल्पाहार / भोजन
- कार्यक्रम के पश्चात भोजन या अल्पाहार रखें।
- विशेष रूप से पीले मीठे चावल (मेवे की खिचड़ी) अवश्य परोसें।

विषय प्रस्तुति
- विषय: "गणगौर है म्हारे राजस्थान री शान"
- समय: 5–7 मिनट
- प्रस्तुति रूप: वक्तव्य या विजुअल प्रेजेंटेशन

- निम्न बिंदुओं को अवश्य शामिल करें:
- गणगौर क्यों मनाया जाता है
- वर्तमान समय में रिश्तों में मधुरता बनाए रखने में इसकी भूमिका
- "गौरा का पीहर आना, लाता मौसम सुहाना"

समापन भाव

बहनों, इस बार गणगौर उत्सव की मिठास और सुवास हम सभी के हृदय को नई उमंग से भर दे - यही हमारी कामना है।

◆ प्रतिमाह ज़ूम पर होने वाली कार्यशालाएँ ◆

कार्यक्रम	शेड्यूल	समय	संयोजिका	मोबाइल नंबर
बागवान	प्रथम सप्ताह	रात्रि 8:00 बजे	श्रीमती सुनीता जैन	98685 16242
तत्वज्ञान प्रशिक्षण	द्वितीय सप्ताह	दोपहर 3:00 बजे	श्रीमती संस्कृति भंडारी	88516 21592
हमसफर	तृतीय सप्ताह	रात्रि 9:00 बजे	श्रीमती कनुप्रिया रांका	98265 35454
स्किल अप	चतुर्थ सप्ताह	रात्रि 9:00 बजे	श्रीमती रेखा सिंयाल	98339 21332
अंकुरम	प्रतिमाह 1 और 15 तारीख	रात्रि 8:30 बजे	श्रीमती अदिति सेखानी	99090 24763
संस्कृत पाठ्यक्रम प्रशिक्षण	प्रति सप्ताह 1 क्लास	दोपहर 3:00 बजे	श्रीमती राजुल मणोत	88008 75707

♦ Upcoming Project ♦

"आचार्य तुलसी शिक्षा" परियोजना

श्रुतोत्सव (रजत जयंती समारोह)

दिनांक: 20–21 जून 2026

पावन सानिध्य: परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी एवं साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी

मुख्य आकर्षण: अतीत के सुनहरे पल, सम्मान व पुरस्कार, दीक्षांत समारोह, श्रुत सागर मंथन (क्विज), जीवन की बदलती दिशा (प्रेरक संस्मरण), थोकड़ों का दृश्यात्मक चित्रण एवं आकर्षक गेम

सहभागिता: तेरापंथ प्रचेता, तत्व प्रचेता एवं तत्व विज्ञ वर्ष 2007 से 2025 तक डिग्री प्राप्त

व्यवस्था: आवास व्यवस्था: 20 जून की रात्रि से 21 जून मध्याह्न तक

रजिस्ट्रेशन शुल्क: 1000/-

अधिक जानकारी के लिए राष्ट्रीय संयोजिका श्रीमती कुसुम बैंगानी 8010139367 से संपर्क करें।

♦ विशेष सूचना ♦

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के अन्तर्गत संचालित आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना हेतु कुछ आवश्यक सूचनाएं:

1. अगस्त माह में चारित्रात्माओं तथा तत्व विज्ञान की परीक्षाएं होती हैं, वे अब अगस्त माह में नहीं होंगी।
2. सभी परीक्षाएं (वर्ष 2026) इस वर्ष दिसम्बर माह में ही आयोजित की जाएंगी।
3. परीक्षा लगभग 17 दिसम्बर से 23 दिसम्बर के मध्य में ही आयोजित की जाएगी।
4. नव पदार्थ (पुण्य-पाप) पुस्तक 10 अप्रैल से अ.भा.ते.म.म. के रोहिणी कार्यालय में उपलब्ध होगी।

♦ युवती विभाग-करणीय कार्य ♦

बहनों, महिला मंडल का इस माह का करणीय कार्य गणगौर उत्सव ही युवती विभाग के लिए भी करणीय है। आप सभी से अपेक्षा है कि महिला मंडल के साथ मिलकर इसमें सक्रिय एवं उत्साहपूर्ण सहभागिता निभाएँ।

चित्र चिंतन

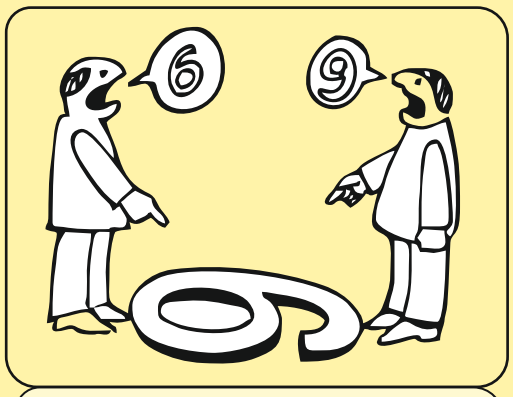

Google Form Link:
https://forms.gle/9R6L3EXAp4jZuo839

अप्रैल का महीना आध्यात्मिक शक्तियों को जागृत करने का, नव ऊर्जा को उजागर करने का समय होता है। अध्यात्म की ओर मनुष्य तब मुखरित होता है जब वह भीतर से शांत और व्यवस्थित होता है। और जैसा गुरुजन फरमाते है, हमारी अपनी शांति, अपना आनंद, अपना सुख हमारे स्वयं के हाथ में होता है। Our own attitude, our own art of control over our expressions play a major role in defining the peace within and around us.

Naman to Lord Mahavira who gave us complete सूत्र of peace, just in one word and that too long back. It is for us now to implement it in any and every situation, odd & even and make sure our peace is indeed intact always.

Google Form Link में संलग्न चित्र के आधार पर 8-10 काव्यात्मक पंक्तियों में अपने विचार प्रेषित करें। अपनी प्रस्तुति को एक सार्थक शीर्षक भी दें।

सूचना:

1. Google Form के माध्यम से भेजी गई अभिव्यक्ति ही मान्य होगी।
2. प्रविष्टी भेजने की अन्तिम तिथि - 12 April 2026।
3. यह प्रतियोगिता बहनों के चिन्तन और लेखन के सामर्थ्य को और अधिक उर्वर बनाने हेतु किया जा रहा एक लघु प्रयास है।
4. अन्य जिज्ञासा हेतु संयोजिका श्रीमती शिल्पा बैद से 9810858490 पर WhatsApp पर Message भेज कर सम्पर्क कर सकते हैं।

आरोहण

By the girls, for the spirit within

प्यारी बेटियों, सस्नेह जय जिनेंद्र।

अप्रैल का महीना भारत में नए वर्ष और नई शुरुआत का प्रतीक है। इस समय अधिकतर विद्यालयों की परीक्षाएँ समाप्त होती हैं और नई कक्षाएँ आरम्भ होती हैं, जिससे विद्यार्थियों के जीवन में एक नए अध्याय की शुरुआत होती है। इसी माह बैसाखी, महावीर जयंती जैसे कई महत्वपूर्ण पर्व भी मनाए जाएंगे।

अक्षय तृतीया का पावन पर्व भी इसी माह आता है, जो हमें अपनी अक्षय शक्ति, क्षमता और संभावनाओं का सदुपयोग करने की प्रेरणा देता है। कामना है कि यह समय आप सभी बेटियों के लिए नई ऊर्जा, उत्साह और सकारात्मक शुरुआत का संदेश लेकर आए। इसी शुभकामना के साथ -

कन्या मंडल संयोजिका	कन्या मंडल सह संयोजिका	अंतरराष्ट्रीय सह संयोजिका
श्रीमती हेमा चोरड़िया	श्रीमती जयश्री जोगड	सुश्री जागृति छाजेड, काठमांडू
98102 81155	90280 84801	+977 98186 78503

कन्या मंडल-करणीय कार्य

E-SHAKTI – "AI Cyber Sakhi"

AI and Cyber Security Awareness for Girls

AI के इस दौर में सोशल मीडिया का जिम्मेदार और सुरक्षित उपयोग अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से कन्याओं को Digital Literacy, AI और Cyber Security के प्रति जागरूक एवं सशक्त बनाने हेतु यह विशेष पहल प्रारंभ की गई है।

आज के समय में ऑनलाइन धोखाधड़ी, हैकिंग और साइबर बुलिंग जैसी चुनौतियों से सुरक्षित रहना तभी संभव है, जब हमें इसकी समुचित जानकारी हो। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म का सुरक्षित एवं समझदारी से उपयोग करना तथा तकनीकी क्षेत्र में नए करियर अवसरों को पहचानना-ये सभी AI की समग्र समझ से ही संभव है। इसी उद्देश्य से आपके लिए आयोजित है-

Webinar: AI CYBER SAKHI – Smart Cyber Security

11 April | 8:30 PM | Zoom Platform

JAINISM IN GENZ

सभी बेटियों के लिए पंच परमेष्ठी गीतिकाएँ एवं 25 बोल कंठस्थ कराने हेतु Online Classes का आयोजन किया जाएगा।

मार्च माह की प्रतियोगिताओं के विजेता रहें:

महिला मंडल QUIZ

Total 1330 Responses

नीलम रांका, दौलतगढ़
कोमल जैन, किशनगढ़
मधुबाला कच्छारा, खार
कमला जैन, पूर्वांचल
मीना सोनी, राजसमंद
टीना जैन, ऐरोली
शर्मिला देवी सांड, कुचबिहार
संगीता दुगड़, साउथ दिल्ली
वाणी बोहरा, भिलाई
प्रियंका बाफना, नीमच

कन्या मंडल QUIZ

Total 389 Responses

हर्षिता भंसाली, बायतू
चेरी लोढा, कांकरोली
दिशा सिंघवी, पालघर
कृतिका सेठिया, सिलीगुड़ी
वर्षा जैन, अजमेर
मुक्ता गधैया, रायपुर
परी जैन, सिलीगुड़ी
नियति डागा, फारबिसगंज
रिया मणोत, पेटलावद
योगिता तातेड़, शाहदरा

युवती विभाग - चित्र चिंतन QUIZ

Total 583 Responses

प्रीति कोचर, बेहाला
खुशी पालगोटा, हुबली
प्रियंका परमार, डोंबिवली
सरला भूतोड़िया, हैदराबाद
पिंकी भंसाली, इरोड
मीना बिनायाकिया, अंकलेश्वर
टीना रांका, आसींद
डिंपल दुधेड़िया, बाली
ज्योति चोपड़ा, बाकानी
किम्मी सिंह, साल्ट लेक

विजेताओं को बहुत-बहुत बधाईयां।

सभी विजेताओं से निवेदन है कि कृपया अपना पता संबंधित संयोजिकाओं को WhatsApp कर दें।

योगक्षेम वर्ष 2026-2027

♦ प्रज्ञा पाथेय-साप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यशाला ♦

योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत आयोजित साप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं का क्रम निरंतर जारी है। देशभर की विभिन्न शाखाओं से चयनित बहनों को प्रातः से सायं तक योग, प्रेक्षाध्यान, तत्वज्ञान, आदि का प्रशिक्षण पूज्यप्रवर आचार्य श्री महाश्रमण जी, साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी, मुख्य मुनि प्रवर, साध्वीवर्या जी एवं अन्य प्रबुद्ध चरित्रात्माओं द्वारा प्रदान किया जाएगा।

31 मई से 4 जुलाई तक के चयनित शाखाओं की सूची इस प्रकार है:

31 MAY To 6 JUNE 2026

HARYANA	ARYA NAGAR	MANJU JAIN	9468025257
HARYANA	BARWALA	PUSHPA SINGLA	9466729227
HARYANA	BHATTU	SHEELA GARG	8059991135
HARYANA	BHIWANI	SUSHMA JAIN	8950217117
HARYANA	CHIKAMANDI	NIRMAL JAIN	9215921797
HARYANA	DABWALI	VEENA GOYAL	9991060071
HARYANA	KALANWALI	SANGEETA SINGLA	9466749023
HARYANA	SIRSA	KUSUM LATA GOYAL	9991900418
HARYANA	TOSHAM	JYOTI JAIN	8168343820
HARYANA	UKLANAMANDI	MANJU JAIN	9253287200

7 JUNE TO 13 JUNE 2026

ODISHA	BALANGIR	NISHA JAIN	9439425000
ODISHA	BALASORE	KUSUM SINGHI(JAIN)	9861416254
ODISHA	BANGOMUNDA	REETA BANSAL	7873565730
ODISHA	BELPADA	LAXMI JAIN	9938990641
ODISHA	BHAWANIPATNA	PUSHPA JAIN	7205153966
ODISHA	BHUBANESHWAR	SUSHILA SETHIA	9937244070
ODISHA	KANTABANJI	BINDIA JAIN	8117943412
ODISHA	ROURKELA	SANGEETA DUGAR	7008263843
ODISHA	SINDHEKELA	LEELA DEVI JAIN	9439426621

14 JUNE TO 20 JUNE 2026

ODISHA	CUTTACK	SUNITA BENGANI	9337368157
ODISHA	JUNAGARH	MEERA JAIN	7064241924
ODISHA	KESINGA	RASHMI JAIN	7787026120
ODISHA	NABARANGPUR	BOBY JAIN	7978243868
ODISHA	RAJGANGPUR	EKTA JAIN	7735886060
ODISHA	RAMPUR (PATANGARH)	JYOTI JAIN	7008233217
ODISHA	SAINTALA	SUDHA JAIN	7008282657
ODISHA	TITILAGARH	BHAWNA JAIN	8917239352
ODISHA	TUSRA	POOJA JAIN	7609936360

21 JUNE TO 27 JUNE 2026

PUNJAB	ABOHAR	KUSUM GOLCHA	9357827536
PUNJAB	AHMEDGARH	BINDIA JAIN	8427873165
PUNJAB	BARETA MANDI	VEENA JAIN	7888395895
PUNJAB	BATHINDA	SUNITA JAIN	6280977509
PUNJAB	BHAWANIGARH	KAMLESH JAIN	9814492560
PUNJAB	BHIKHI	KAVITA JAIN	9041276185
PUNJAB	BUDHLADA	REETA GARG	9815586498
PUNJAB	DHURI	MADHU BALA	9417484635
PUNJAB	FAZILKA	SARITA SAWANSUKHA	8558046688
PUNJAB	JAITO	SUSHMA JAIN	8508400551
PUNJAB	LUDHIANA	JAYA BUCHA	9876063117
PUNJAB	SANGRUR	SUSHEEL GUPTA	9872021890
PUNJAB	SHERPUR	KAMLA GARG	9888262319
PUNJAB	TAPA	VEENA RANI	9501325202

28 JUNE TO 4 JULY 2026

PUNJAB	CHANDIGARH	SARITA BOTHRA	7589367647
PUNJAB	JAGRAON	PROMILA JAIN	9814457990
PUNJAB	KOTAKPURA	KAVITA JAIN	9464619838
PUNJAB	LEHRAGAGA	SEEMA JAIN	9463754766
PUNJAB	LONGOWAL	BIMLA JAIN	9464684249
PUNJAB	MALERKOTLA	RENU JAIN	6239177790
PUNJAB	MANDI GOBINDGARH	SUMITA KHULLAR	9815756900
PUNJAB	MANSA	VANITA SAMRA	9478327872
PUNJAB	NABHA	SUMAN WALIYA	9463562804
PUNJAB	PATIALA	PREM LATA JAIN	9888285891
PUNJAB	PATRAN	RAMA JAIN	6239635060
PUNJAB	PUNJAB PHILLAUR	RITU JAIN	7837405645
PUNJAB	RAIKOT	SHREEMATI BIMLA JAIN	9465532063
PUNJAB	SAMANA	SAMTA GOYAL	9815480014
PUNJAB	SUNAM	BHAVNA JAIN	8727952914

आवश्यक निर्देश:

1. चयनित बहनें अपनी टिकटें समय पर बनवाकर संयोजिकाओं को सूचित करें। 2. आवास एवं भोजन की व्यवस्था अ.भा.ते.म.मं. द्वारा रहेगी।
3. सेवा में भाग लेने वाली प्रत्येक बहन के लिए सातों दिन निर्धारित गणवेश पहनना तथा अपना आधार कार्ड एवं एक पासपोर्ट साइज फोटो साथ लाना अनिवार्य है।
4. प्रज्ञा पाथेय भावना चौका सेवा हेतु केवल 60 वर्ष तक की स्वस्थ बहनें ही अनुमत हैं।

ज्ञान चेतना
प्रश्नोत्तरी
अप्रैल 2026
QUIZ-6

महिला मंडल Quiz

सही उत्तर लिखें:

1) आत्म-कल्याण किसमें है?
2) क्या विकसित किये बिना चौधरी न बने?
3) भलाई और बुराई को कौन बांट देता है?
4) किसके लिए कांच और रत्न समान होते हैं?
5) "मैं तो सबके साथ होऊंगा" ये कैसा चिंतन है?
6) कथनी और करनी का भेद किस की दुर्बलता है?
7) सडे पान के समान आचार्य भिक्षु ने किसे कहा है?
8) किसकी कृति की आदि भी होती है, अन्त भी और मध्य भी?
9) 'भिक्षु विचार दर्शन' पुस्तक आचार्य तुलसी की प्रेरणा से किसने लिखी?
10) सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप- मुक्ति के मार्ग ये ही है, ये किसने कहा?
11) कुएं पर बिछी जाजिम के समान कुगुरु का वेश है, यह आचार्य भिक्षु ने कौन सी चौपाई में बताया?
12) क्षण में रुष्ट और क्षण में तुष्ट होने वाले व्यक्ति के मनोभाव को आचार्य भिक्षु ने किसके समान बताया?

रिक्त स्थान की पूर्ति करें:

1) ___ दुर्लभ है।
2) कुगुरू ___ के समान है।
3) ज्योतिहीन ___ भी श्रेय नहीं।
4) उसने ___ का स्वाद चखा ही नहीं।
5) द्वेष मिटाने पर भी ___ रह जाता है।
6) वे ___ का पोषण करने में रत रहेंगे।
7) ___ से काम लिया, तब सफल हो गया।
8) ___ के लिए शरीर-बल अपेक्षित नहीं है।
9) वे गायों के समूह में, ___ की भांति रेंकते हैं।
10) तुम्हारी ___ में मुझे परम आनन्द मिलता है।
11) भिक्षु विचार दर्शन यह एक मनुष्य की ___ है।
12) जो विनीत के द्वारा प्रतिबुद्ध है, वह ___ की भांति सबसे घुल जाता है।

मार्च 2026 माह की महिला मंडल क्विज के सही जवाब

सही उत्तर लिखें		रिक्त स्थान की पूर्ति करें	
1) अनुशासन	6) जिनाज्ञा	1) साधु	6) शांति-पाठ
2) आग्रह	7) मर्यादा	2) श्रद्धा	7) संग्रह
3)केवलीगम्य	8) चरित्र	3) अश्रुत	8) आत्मसंयम
4)जयाचार्य	9) विगय	4) स्वार्थ	9) विष
5)गण	10) अशांत	5) आकर्षण शक्ति	10) एकता

सन्दर्भ पुस्तक: भिक्षु विचार दर्शन (पेज संख्या..187 से 206)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

संयोजिका	सह संयोजिका
श्रीमती अर्चना भंडारी	श्रीमती मीना बड़ाला
98100 11500	93209 53145

Google Form Link:
https://forms.gle/SBpjUcSYAP1jHr7V7

कन्या मंडल Quiz

Crosswords:

संदर्भ: तेरापंथ प्रबोध पद्य संख्या 51-60

बांए से दांए (Left to Right)

1) आचार्य भिक्षु ने क्या बनाकर सब सन्तों को दिखाकर उनकी हार्दिक सहमति ली (4)
3) जयाचार्य के विद्यागुरु कौन थे (5)
5) तिलोक चन्द जी की आंखों की ज्योति चली गई इस बात से आचार्य भिक्षु की कौन सी सिद्धि सबके सामने आ गई (3)
6) चन्द्रभाण जी ने किस पद के लिए तिलोकचन्द जी का नाम सुझाया (3)
7) पगफेरा (3)
8) अट्ठारै तेपन में दीक्षा का क्या हुआ था (3)
11) वि.सं.1859 के अंतिम संविधान के आधार पर कौन सा महोत्सव मनाते है (3)
13) आचार्य भिक्षु ने किसका नया आविष्कार किया जो किसी भी धर्मतन्त्र के लिए एक आदर्श बन सकता है (5)
14) तेरापंथ धर्मसंध का प्राण व त्राण क्या है (5)
15) कौनसी तिथि को संविधान का लिखत लिखा (3)

ऊपर से नीचे (Top to Bottom)

1) आचार्य भिक्षु के मन में किसे सुव्यवस्थित चलाने का विश्वास हुआ (2)
2) एक छोटे से पत्र में संविधान की क्या लिखी गई जो अपने आप में महत्वपूर्ण है (2)
3) मुनि हेमराजजी की दीक्षा का वर्णन किसमें उपलब्ध है (6)
4) हेमनवरसो किनके द्वारा विरचित है (4)
7) वि.सं.1832 में आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ धर्मसंघ का कौन सा संविधान लिखा (3)
9) वि.सं.1832 में कौन से महिने में संविधान का लिखत लिखा (4)
10) आचार्य भिक्षु ने किन्हें अपना उत्तराधिकारी निर्णित किया (5)
12) किसमें लिखी गई संविधान की प्रत्येक धारा महत्वपूर्ण है (2)

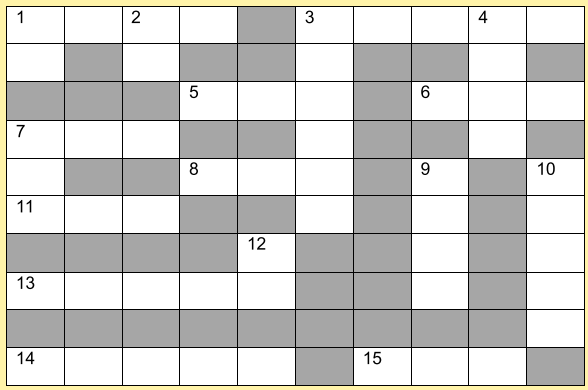

मार्च 2026 माह की कन्यामंडल वर्ग पहेली के सही जवाब

बाएं से दाएं		ऊपर से नीचे	
1) आतापना	11) रूघनाथ जी	1) आतम	10) नाथद्वारा
3) तेरह	12) नाथजी	2) थिरपालजी	13) पाली
5) लार	14) छत्तीस	3) तेरा	15) सन्तां
6)मट्टू जी	17) अरावली	4) हरनाथ जी	16) तुलसी
7) पात्री	19) तपस्विनी	8) तीन	17) अखी
8) तीरथ		9) मेरू	18) सात

संयोजिका श्रीमती मंजू भूतोडिया

Google Form Link: https://forms.gle/eFu58yRkA3npbNEW7

प्रश्नोत्तरी भरकर भेजने की अंतिम तिथि 15 अप्रैल 2026 है।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को प्रदत्त अनुदान

समस्त अनुदानदाताओं का हार्दिक आभार

₹ 3,00,000
श्रीमती ज्योति जी जैन,
कोलकाता

₹ 3,00,000
श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
स्व. श्रीमती रतनी देवी जी बोथरा
की स्मृति में,
श्रीमती मनीषा जी बोथरा,
इस्लामपुर

₹ 3,00,000
श्रीमान देवेंद्र कुमार जी सुराणा,
हैदराबाद

₹ 3,00,000
श्रीमती दीपा जी पारख,
चेन्नई

₹ 3,00,000
गिरिया परिवार,
बैंगलोर-चेन्नई-बीदासर

₹ 2,00,000
स्व. श्रीमान हंसराज जी बैंगानी
की स्मृति में,
श्रीमान जतन जी, नरेन्द्र जी,
अभिषेक जी व ऋषि जी बैंगानी,
लाडनूं-कोलकाता

₹ 1,00,000
गुप्त दान

₹ 51,000
"हुनर"
गांधी मेहता परिवार,
बाड़मेर-मेड़ता-सूरत

₹ 51,000
श्रीमती मीना जी ओस्तवाल,
"पन्ना टेक्सटाइल्स मिल्स"
बालोतरा-अहमदाबाद

₹ 51,000
कांकड़िया परिवार,
इचलकरंजी

₹ 21,000
श्रीमान भरत जी, सुनील जी,
लक्ष्य जी व हर्ष जी गोलेछा,
जसोल-चेन्नई

पंजीकृत कार्यालय: रोहिणी, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं (राज.) 341306

महामंत्री कार्यालय
Rachna Hiran
604 Thakur Jewel,
Near HDFC Bank,
Thakur Village, Kandivali East,
Mumbai - 400101
Mob.: 9821385587
Email: rachnapritam@yahoo.co.in

नारीलोक

नारीलोक प्राप्ति हेतु संपर्क सूत्र
Nutan Lodha
Mob.: 9869371153

कोषाध्यक्ष
Mamta Ranka
Indra Chowk New Line,
Gangashahar,
Bikaner- 334401
Mob.: 9414142924
Email: mamtaranka002@gmil.com

www.facebook.com/abtmmjain/

www.abtmm.org

www.youtube.com/channel/UCMnsuMEyhhQWvDbnrfwpdEQ